



Dilip ji suvalka

24 Oct 1977

08:47 AM

Bagor

Model: Web-KundliPhal

Order No: 121835401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 24/10/1977
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 08:47:00 घंटे
इष्ट _____: 05:25:00 घटी
स्थान _____: Bagor
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 74:03:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:33:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:13:12 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:47 घंटे
साम्पातिक काल _____: 10:22:52 घंटे
सूर्योदय _____: 06:37:00 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:58:54 घंटे
दिनमान _____: 11:21:54 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 07:03:29 तुला
लग्न के अंश _____: 04:37:08 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: व्याघात
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: दू-दूधेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1899	कार्तिक	2
पंजाबी	संवत : 2034	कार्तिक	9
बंगाली	सन् : 1384	कार्तिक	7
तमिल	संवत : 2034	आइपसी	8
केरल	कोल्लम : 1153	तुलम	8
नेपाली	संवत : 2034	कार्तिक	8
चैत्रादि	संवत : 2034	आश्विन	शुक्ल 13
कार्तिकादि	संवत : 2034	आश्विन	शुक्ल 13

पंचांग

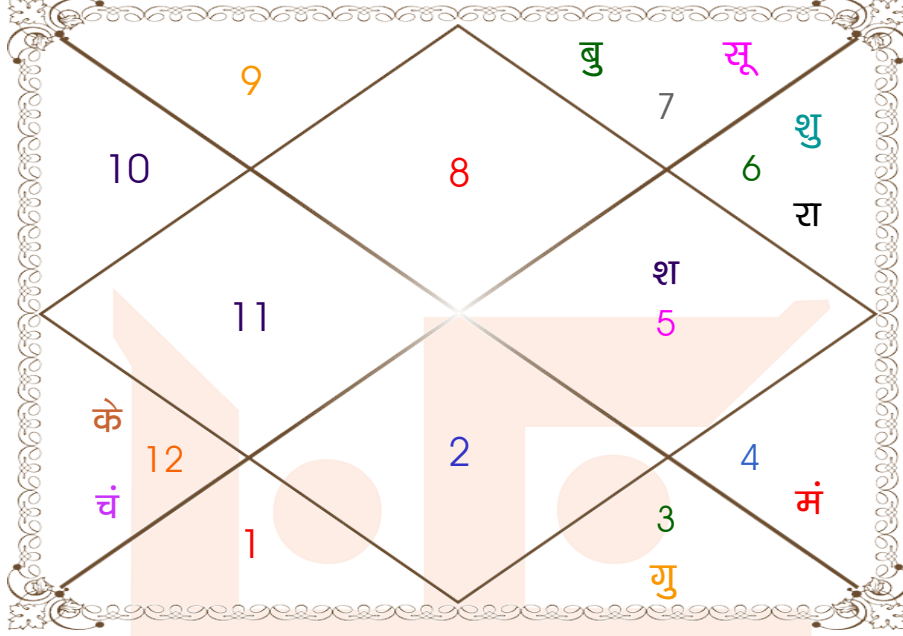
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 13
तिथि समाप्ति काल _____ : 26:55:49
जन्म तिथि _____ : 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 07:13:50 घंटे
जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
योग समाप्ति काल _____ : 06:39:50 घंटे
जन्म योग _____ : व्याघात
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 14:39:38 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 03:52:58
भभोग _____ : 62:47:10
भोग्य दशा काल _____ : शनि 17 वर्ष 9 मा 23 दि

घात चक्र

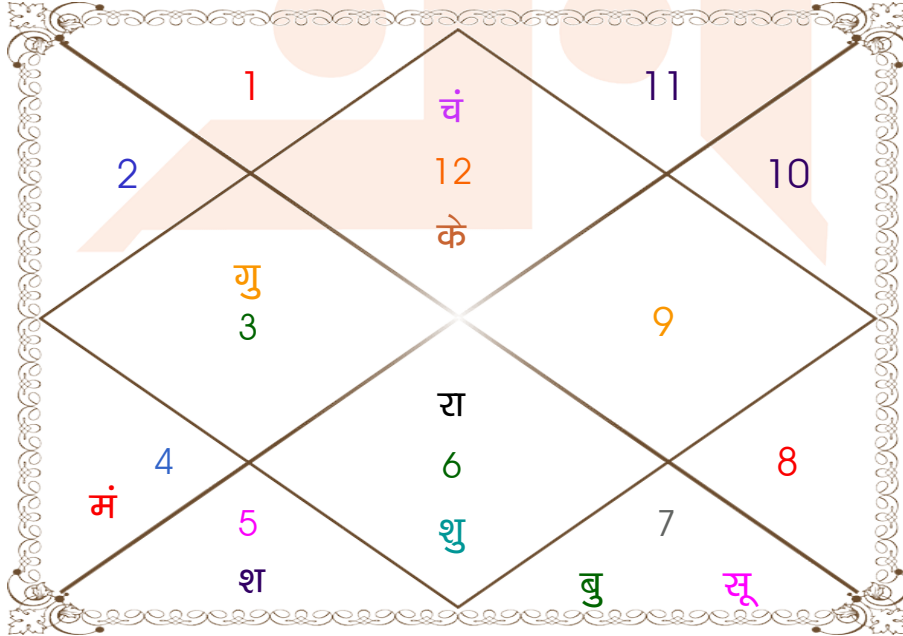
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

के चं			गु
			मं
			श
	ल	बु सू	रा शु

लग्न कुण्डली

		के चं
गु		
	मं	
श		
शु रा	सू बु	ल

विंशोत्तरी
शनि 17वर्ष 9मा 23दि
शनि

24/10/1977

17/08/2096

शनि	18/08/1995
बुध	17/08/2012
केतु	18/08/2019
शुक्र	18/08/2039
सूर्य	18/08/2045
चन्द्र	18/08/2055
मंगल	18/08/2062
राहु	17/08/2080
गुरु	17/08/2096

योगिनी

भद्रिका 4वर्ष 8मा 7दि
सिद्धा

02/07/2024

03/07/2031

सिद्धा	11/11/2025
संकटा	02/06/2027
मंगला	12/08/2027
पिंगला	01/01/2028
धान्या	01/08/2028
भामरी	12/05/2029
भद्रिका	02/05/2030
उल्का	03/07/2031

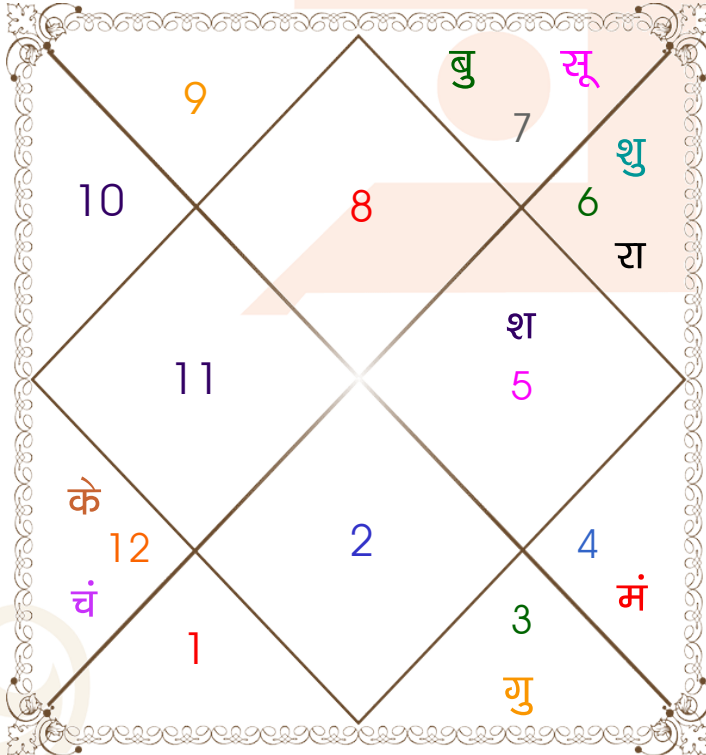
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	04:37:08	312:02:09	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
सूर्य			तुला	07:03:29	00:59:45	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	नीच राशि
चंद्र			मीन	04:09:52	12:50:18	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल			कर्क	05:18:01	00:26:29	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	नीच राशि
बुध	अ		तुला	10:29:17	01:37:58	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मित्र राशि
गुरु			मिथु	12:35:38	00:00:04	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	15:13:12	01:14:33	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शनि			सिंह	04:55:54	00:04:51	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	शत्रु राशि
राहु			कन्या	21:43:50	00:00:58	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
केतु			मीन	21:43:50	00:00:58	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	मूलत्रिकोण
हर्ष			तुला	17:50:51	00:03:42	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	---
नेप			वृश्चि	20:44:47	00:01:45	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
प्लूटो			कन्या	21:11:08	00:02:17	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	---
दशम भाव			सिंह	10:16:03	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	शनि	--

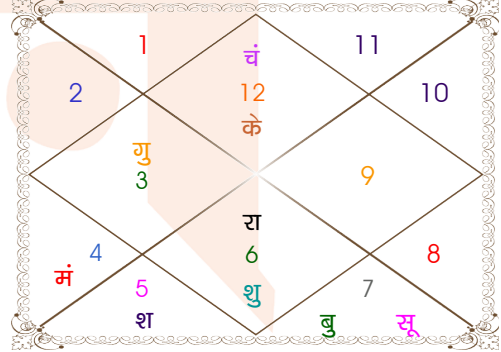
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:53

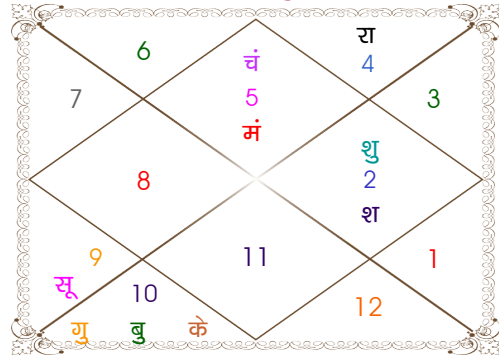
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 20:33:37	वृश्चिक 04:37:08
2	वृश्चिक 20:33:37	धनु 06:30:06
3	धनु 22:26:35	मकर 08:23:05
4	मकर 24:19:34	कुम्भ 10:16:03
5	कुम्भ 24:19:34	मीन 08:23:05
6	मीन 22:26:35	मेष 06:30:06
7	मेष 20:33:37	वृष 04:37:08
8	वृष 20:33:37	मिथुन 06:30:06
9	मिथुन 22:26:35	कर्क 08:23:05
10	कर्क 24:19:34	सिंह 10:16:03
11	सिंह 24:19:34	कन्या 08:23:05
12	कन्या 22:26:35	तुला 06:30:06

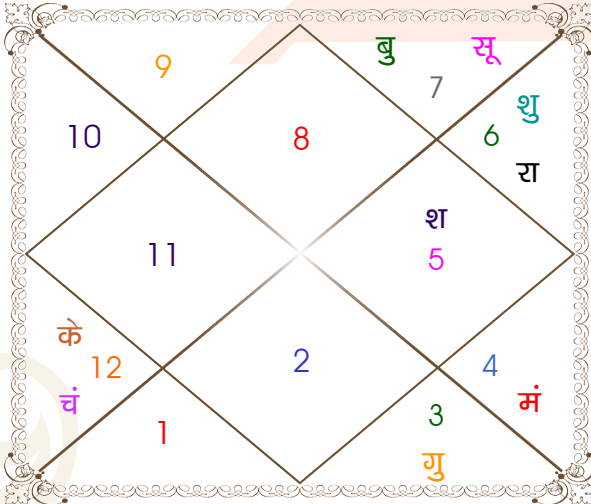
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	04:37:08
2	धनु	04:26:47
3	मकर	06:38:50
4	कुम्भ	10:16:03
5	मीन	12:16:57
6	मेष	10:17:30
7	वृष	04:37:08
8	मिथुन	04:26:47
9	कर्क	06:38:50
10	सिंह	10:16:03
11	कन्या	12:16:57
12	तुला	10:17:30

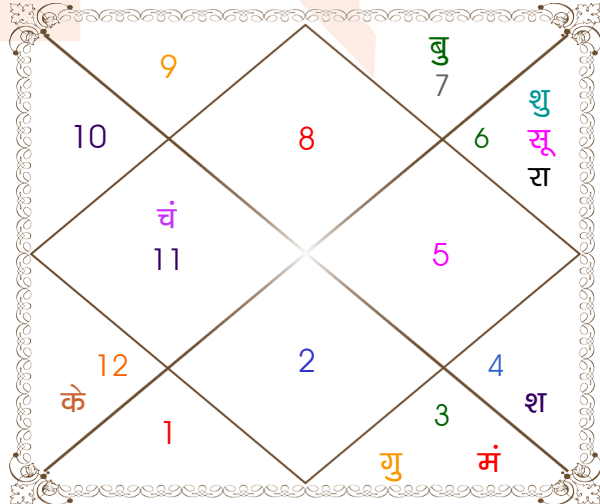
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



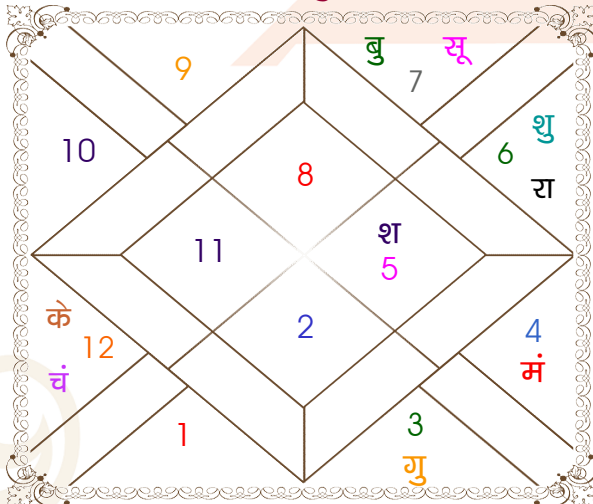
कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	कारक		अवस्था				ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	मातृ	पितृ	कुमार	भीत	निद्रा	0.16	11 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	शक्त	कौतुक	7.27	45 %
मंगल	पुत्र	भातृ	मृत	भीत	नेत्रपाणि	0.63	20 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	नेत्रपाणि	0.00	25 %
गुरु	अमात्य	धन	युवा	खल	नेत्रपाणि	2.45	75 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	युवा	भीत	भोजन	0.70	47 %
शनि	ज्ञाति	आयु	बाल	खल	कौतुक	2.91	31 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	स्वस्थ	कौतुक	0.00	5 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	स्वस्थ	निद्रा	0.00	5 %
कुल						14.13	

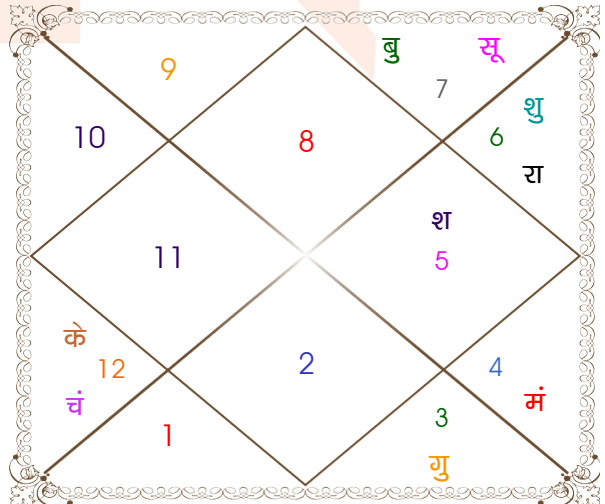
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 9 मास 23 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
24/10/1977	18/08/1995	17/08/2012	18/08/2019	18/08/2039
18/08/1995	17/08/2012	18/08/2019	18/08/2039	18/08/2045
शनि 21/08/1979	बुध 14/01/1998	केतु 13/01/2013	शुक्र 18/12/2022	सूर्य 06/12/2039
बुध 30/04/1982	केतु 11/01/1999	शुक्र 16/03/2014	सूर्य 18/12/2023	चंद्र 05/06/2040
केतु 09/06/1983	शुक्र 11/11/2001	सूर्य 21/07/2014	चंद्र 18/08/2025	मंगल 11/10/2040
शुक्र 09/08/1986	सूर्य 17/09/2002	चंद्र 19/02/2015	मंगल 18/10/2026	राहु 05/09/2041
सूर्य 22/07/1987	चंद्र 17/02/2004	मंगल 19/07/2015	राहु 17/10/2029	गुरु 24/06/2042
चंद्र 19/02/1989	मंगल 13/02/2005	राहु 05/08/2016	गुरु 17/06/2032	शनि 06/06/2043
मंगल 31/03/1990	राहु 02/09/2007	गुरु 12/07/2017	शनि 18/08/2035	बुध 11/04/2044
राहु 04/02/1993	गुरु 08/12/2009	शनि 21/08/2018	बुध 18/06/2038	केतु 17/08/2044
गुरु 18/08/1995	शनि 17/08/2012	बुध 18/08/2019	केतु 18/08/2039	शुक्र 18/08/2045

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
18/08/2045	18/08/2055	18/08/2062	17/08/2080	17/08/2096
18/08/2055	18/08/2062	17/08/2080	17/08/2096	00/00/0000
चंद्र 18/06/2046	मंगल 14/01/2056	राहु 30/04/2065	गुरु 05/10/2082	शनि 24/10/2097
मंगल 17/01/2047	राहु 01/02/2057	गुरु 24/09/2067	शनि 18/04/2085	00/00/0000
राहु 18/07/2048	गुरु 08/01/2058	शनि 31/07/2070	बुध 25/07/2087	00/00/0000
गुरु 17/11/2049	शनि 16/02/2059	बुध 16/02/2073	केतु 30/06/2088	00/00/0000
शनि 18/06/2051	बुध 14/02/2060	केतु 06/03/2074	शुक्र 01/03/2091	00/00/0000
बुध 17/11/2052	केतु 12/07/2060	शुक्र 06/03/2077	सूर्य 18/12/2091	00/00/0000
केतु 18/06/2053	शुक्र 11/09/2061	सूर्य 29/01/2078	चंद्र 18/04/2093	00/00/0000
शुक्र 16/02/2055	सूर्य 17/01/2062	चंद्र 31/07/2079	मंगल 25/03/2094	00/00/0000
सूर्य 18/08/2055	चंद्र 18/08/2062	मंगल 17/08/2080	राहु 17/08/2096	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 17 वर्ष 9 मा 27 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध
18/08/2025	18/10/2026	17/10/2029	17/06/2032	18/08/2035
18/10/2026	17/10/2029	17/06/2032	18/08/2035	18/06/2038
मंगल 11/09/2025	राहु 31/03/2027	गुरु 24/02/2030	शनि 18/12/2032	बुध 12/01/2036
राहु 14/11/2025	गुरु 24/08/2027	शनि 28/07/2030	बुध 30/05/2033	केतु 12/03/2036
गुरु 10/01/2026	शनि 14/02/2028	बुध 13/12/2030	केतु 06/08/2033	शुक्र 31/08/2036
शनि 19/03/2026	बुध 18/07/2028	केतु 08/02/2031	शुक्र 15/02/2034	सूर्य 22/10/2036
बुध 18/05/2026	केतु 20/09/2028	शुक्र 21/07/2031	सूर्य 13/04/2034	चंद्र 16/01/2037
केतु 12/06/2026	शुक्र 21/03/2029	सूर्य 07/09/2031	चंद्र 19/07/2034	मंगल 18/03/2037
शुक्र 22/08/2026	सूर्य 15/05/2029	चंद्र 27/11/2031	मंगल 24/09/2034	राहु 20/08/2037
सूर्य 12/09/2026	चंद्र 14/08/2029	मंगल 23/01/2032	राहु 17/03/2035	गुरु 05/01/2038
चंद्र 18/10/2026	मंगल 17/10/2029	राहु 17/06/2032	गुरु 18/08/2035	शनि 18/06/2038

शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु
18/06/2038	18/08/2039	06/12/2039	05/06/2040	11/10/2040
18/08/2039	06/12/2039	05/06/2040	11/10/2040	05/09/2041
केतु 13/07/2038	सूर्य 24/08/2039	चंद्र 21/12/2039	मंगल 13/06/2040	राहु 29/11/2040
शुक्र 22/09/2038	चंद्र 02/09/2039	मंगल 31/12/2039	राहु 02/07/2040	गुरु 12/01/2041
सूर्य 13/10/2038	मंगल 08/09/2039	राहु 28/01/2040	गुरु 19/07/2040	शनि 05/03/2041
चंद्र 18/11/2038	राहु 24/09/2039	गुरु 21/02/2040	शनि 08/08/2040	बुध 21/04/2041
मंगल 12/12/2038	गुरु 09/10/2039	शनि 21/03/2040	बुध 26/08/2040	केतु 10/05/2041
राहु 14/02/2039	शनि 26/10/2039	बुध 16/04/2040	केतु 03/09/2040	शुक्र 04/07/2041
गुरु 12/04/2039	बुध 11/11/2039	केतु 27/04/2040	शुक्र 24/09/2040	सूर्य 20/07/2041
शनि 19/06/2039	केतु 17/11/2039	शुक्र 27/05/2040	सूर्य 30/09/2040	चंद्र 17/08/2041
बुध 18/08/2039	शुक्र 06/12/2039	सूर्य 05/06/2040	चंद्र 11/10/2040	मंगल 05/09/2041

सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र
05/09/2041	24/06/2042	06/06/2043	11/04/2044	17/08/2044
24/06/2042	06/06/2043	11/04/2044	17/08/2044	18/08/2045
गुरु 14/10/2041	शनि 18/08/2042	बुध 20/07/2043	केतु 19/04/2044	शुक्र 17/10/2044
शनि 29/11/2041	बुध 06/10/2042	केतु 07/08/2043	शुक्र 10/05/2044	सूर्य 04/11/2044
बुध 09/01/2042	केतु 26/10/2042	शुक्र 28/09/2043	सूर्य 17/05/2044	चंद्र 05/12/2044
केतु 26/01/2042	शुक्र 23/12/2042	सूर्य 13/10/2043	चंद्र 27/05/2044	मंगल 26/12/2044
शुक्र 16/03/2042	सूर्य 10/01/2043	चंद्र 08/11/2043	मंगल 04/06/2044	राहु 19/02/2045
सूर्य 31/03/2042	चंद्र 07/02/2043	मंगल 26/11/2043	राहु 23/06/2044	गुरु 09/04/2045
चंद्र 24/04/2042	मंगल 28/02/2043	राहु 12/01/2044	गुरु 10/07/2044	शनि 05/06/2045
मंगल 11/05/2042	राहु 21/04/2043	गुरु 22/02/2044	शनि 30/07/2044	बुध 27/07/2045
राहु 24/06/2042	गुरु 06/06/2043	शनि 11/04/2044	बुध 17/08/2044	केतु 18/08/2045

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि
18/08/2045	18/06/2046	17/01/2047	18/07/2048	17/11/2049
18/06/2046	17/01/2047	18/07/2048	17/11/2049	18/06/2051
चंद्र 12/09/2045	मंगल 30/06/2046	राहु 09/04/2047	गुरु 21/09/2048	शनि 16/02/2050
मंगल 30/09/2045	राहु 01/08/2046	गुरु 21/06/2047	शनि 07/12/2048	बुध 09/05/2050
राहु 14/11/2045	गुरु 30/08/2046	शनि 16/09/2047	बुध 14/02/2049	केतु 12/06/2050
गुरु 25/12/2045	शनि 02/10/2046	बुध 03/12/2047	केतु 14/03/2049	शुक्र 16/09/2050
शनि 11/02/2046	बुध 02/11/2046	केतु 04/01/2048	शुक्र 03/06/2049	सूर्य 15/10/2050
बुध 26/03/2046	केतु 14/11/2046	शुक्र 04/04/2048	सूर्य 28/06/2049	चंद्र 03/12/2050
केतु 13/04/2046	शुक्र 20/12/2046	सूर्य 01/05/2048	चंद्र 07/08/2049	मंगल 05/01/2051
शुक्र 03/06/2046	सूर्य 30/12/2046	चंद्र 16/06/2048	मंगल 05/09/2049	राहु 02/04/2051
सूर्य 18/06/2046	चंद्र 17/01/2047	मंगल 18/07/2048	राहु 17/11/2049	गुरु 18/06/2051
चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल
18/06/2051	17/11/2052	18/06/2053	16/02/2055	18/08/2055
17/11/2052	18/06/2053	16/02/2055	18/08/2055	14/01/2056
बुध 30/08/2051	केतु 29/11/2052	शुक्र 27/09/2053	सूर्य 26/02/2055	मंगल 27/08/2055
केतु 30/09/2051	शुक्र 04/01/2053	सूर्य 28/10/2053	चंद्र 13/03/2055	राहु 18/09/2055
शुक्र 25/12/2051	सूर्य 14/01/2053	चंद्र 17/12/2053	मंगल 23/03/2055	गुरु 08/10/2055
सूर्य 20/01/2052	चंद्र 01/02/2053	मंगल 22/01/2054	राहु 20/04/2055	शनि 01/11/2055
चंद्र 03/03/2052	मंगल 13/02/2053	राहु 23/04/2054	गुरु 14/05/2055	बुध 22/11/2055
मंगल 02/04/2052	राहु 17/03/2053	गुरु 13/07/2054	शनि 12/06/2055	केतु 30/11/2055
राहु 19/06/2052	गुरु 15/04/2053	शनि 18/10/2054	बुध 08/07/2055	शुक्र 25/12/2055
गुरु 27/08/2052	शनि 18/05/2053	बुध 12/01/2055	केतु 19/07/2055	सूर्य 02/01/2056
शनि 17/11/2052	बुध 18/06/2053	केतु 16/02/2055	शुक्र 18/08/2055	चंद्र 14/01/2056
मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध	मंगल - केतु
14/01/2056	01/02/2057	08/01/2058	16/02/2059	14/02/2060
01/02/2057	08/01/2058	16/02/2059	14/02/2060	12/07/2060
राहु 12/03/2056	गुरु 18/03/2057	शनि 13/03/2058	बुध 09/04/2059	केतु 22/02/2060
गुरु 02/05/2056	शनि 11/05/2057	बुध 09/05/2058	केतु 30/04/2059	शुक्र 18/03/2060
शनि 02/07/2056	बुध 28/06/2057	केतु 02/06/2058	शुक्र 29/06/2059	सूर्य 26/03/2060
बुध 25/08/2056	केतु 18/07/2057	शुक्र 08/08/2058	सूर्य 17/07/2059	चंद्र 07/04/2060
केतु 16/09/2056	शुक्र 13/09/2057	सूर्य 28/08/2058	चंद्र 16/08/2059	मंगल 16/04/2060
शुक्र 19/11/2056	सूर्य 30/09/2057	चंद्र 01/10/2058	मंगल 07/09/2059	राहु 08/05/2060
सूर्य 08/12/2056	चंद्र 29/10/2057	मंगल 25/10/2058	राहु 31/10/2059	गुरु 28/05/2060
चंद्र 09/01/2057	मंगल 17/11/2057	राहु 24/12/2058	गुरु 18/12/2059	शनि 21/06/2060
मंगल 01/02/2057	राहु 08/01/2058	गुरु 16/02/2059	शनि 14/02/2060	बुध 12/07/2060

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

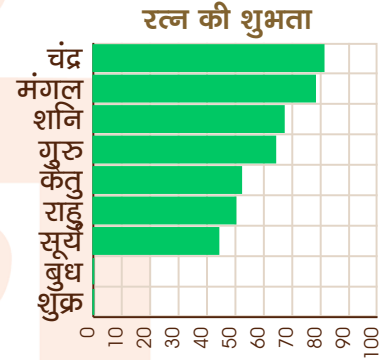
मूलांक	6
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	78%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	67%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम, सुख
पुखराज	गुरु	64%	दुर्घटना से बचाव, धन, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	52%	सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	50%	धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	44%	व्यय, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	0%	व्यय, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	18/08/1995	19%	69%	66%	0%	64%	9%	80%	57%	29%
बुध	17/08/2012	53%	69%	78%	6%	64%	9%	67%	50%	52%
केतु	18/08/2019	19%	69%	84%	0%	64%	9%	55%	26%	64%
शुक्र	18/08/2039	19%	69%	78%	0%	64%	22%	73%	57%	58%
सूर्य	18/08/2045	59%	88%	84%	0%	70%	0%	55%	26%	29%
चंद्र	18/08/2055	53%	94%	78%	0%	64%	0%	67%	26%	29%
मंगल	18/08/2062	53%	88%	91%	0%	70%	0%	67%	26%	58%
राहु	17/08/2080	19%	69%	66%	0%	64%	9%	73%	63%	29%
गुरु	17/08/2096	53%	88%	84%	0%	77%	0%	67%	50%	52%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम, पुखराज, लहसुनिया एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई हैं वो फिर से शुरू हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्नी से १० रत्नी का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते हैं। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दशम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न शुभता से आप सदा प्रसन्न रहने वाले, पुण्यकर्म करने वाले, लोगों के प्रेम-पात्र और माननीय बनेंगे। रत्न शुभता से आप नीतिज्ञ, नम्र स्वभाव वाले और महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। यह रत्न आपको परिश्रमी और चतुर भी बनाएगा। नीलम रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बढ़ाएगा। पराक्रम भाव की वृद्धि करेगा। आपको कार्यक्षेत्र में धीरे-धीरे प्रगति प्राप्त होगी। लडाईं-झगडे और युद्ध में विजयी होंगे। नीलम रत्न जीवन में उच्च पद देगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपत्ति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती,

अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। इसलिए आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न की शुभता से आप को पैतृक धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको दीर्घायु प्रदान कर आपको चिरंजीवी बनायेगा। रत्न प्रभाव से आपको तीर्थ यात्राएं करने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। स्वजनों से अत्यधिक लगाव बनाये रखेगा। पुखराज आपको पारिवारिक संस्कार और पंरम्पराओं का पालन करने में सुख का अनुभव करायेगा। पुखराज रत्न से आपको अच्छे मित्रों की संगति प्राप्त होगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़तेरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से

आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु अष्टम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको चोट एवं दुर्घटनाओं से बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपनी ऊर्जा शक्ति का उपयोग देशहित के कार्यों में करेंगे तथा इस रत्न को पहनने से पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति के योग बनेंगे। यह रत्न आपको स्वजनों के निकट रहने का सुख देगा। आप का शरीर पुष्ट और बलशाली होगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको आय क्षेत्रों में नियमितता देगा। आप शुभ कर्मों की ओर अग्रसर होंगे। यह रत्न आपको उदर रोग, गुदा रोग और अत्यधिक रक्त प्रवाह की हानि से बचाएगा। साथ ही रत्न शुभता आपको असमय मृत्यु भय से मुक्त करेगी।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको सेवा कर्म में सुख एवं उद्योग-धंधों में लाभ एवं सफलता देगा। इस रत्न की शुभता से आपको इहलोक और परलोक दोनों में सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख भोगने के अवसर देगा। आपके व्यर्थ के व्ययों को नियंत्रित करेगा। इस रत्न को पहनने पर आप ऋण मुक्त, धार्मिक, परोपकारी और प्रलोभन से मुक्त होंगे। यह रत्न शुभ होकर आपको शयन सुख देगा तथा अनिद्रा रोग का निवारण करेगा। यह रत्न पहन कर आप अपने जीवन लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर पाएंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी

प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नजर दोष दे सकते हैं। आपको चश्मे का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। कुंडली के अन्य अशुभ योगों के प्रभाव के कारण सूर्य अपने शुभफल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको पिता, पद, प्रतिष्ठा और सामाजिक क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करने में दिक्कतें दे सकता है। अपने पद प्रतिष्ठा को मजबूत करने पर आपका ध्यान विशेष रूप से केन्द्रित हो सकता है। रत्न प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आपकी प्रवृत्ति कठोर शासक की हो सकती है। यह रत्न आपको अत्यधिक महत्वाकांक्षी बना सकता है। सरकारी पक्ष से सहयोग की कमी का अनुभव समय-समय पर होगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको अधिकार सत्ता देकर कुछ अहंकारी भी बना सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड़ सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय-समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते हैं। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता

है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते हैं। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आय क्षेत्रों की सफलता प्रभावित हो सकती है। बुद्धि चातुर्य के असहयोग के कारण आपको विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्धि में कमी हो सकती है। इस रत्न से आपके नियमित रूप से धनागमन बाधित हो सकता है। दिनों दिन धनवृद्धि में अस्थिरता आ सकती है। आपके घर में सभी प्रकार की समृद्धि और सम्पन्नता के पक्ष से भी हीरा रत्न अनुकूल फलदायक नहीं होगा। अधिक से अधिक धन पाने के लिए आप सत्य से विमुख हो सकते हैं। इमारतें बनवाने का कार्य आपको हानि दे सकता है। विवाह के माध्यम से आपको धनहानि हो सकती है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(18/08/2019 - 18/08/2039)

शुक्र की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मोती, पुखराज, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा, माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(18/08/2039 - 18/08/2045)

सूर्य की दशा में आपका मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(18/08/2045 - 18/08/2055)

चन्द्र की दशा में आपका मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, पुखराज व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(18/08/2055 - 18/08/2062)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(18/08/2062 - 17/08/2080)

नीलम, मोती, मूंगा, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(17/08/2080 - 17/08/2096)

गुरु की दशा में आपका मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, माणिक्य, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ॐ सौं सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता है। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता है। उस भाव के फलों का नाश करता है। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता है। उस भाव के फलों की हानि होती है। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय है। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता है।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता है।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपत्ति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षों के उपरान्त आपको कार्यों में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यों पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उत्तम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से

शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	कम खर्च
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सुख
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

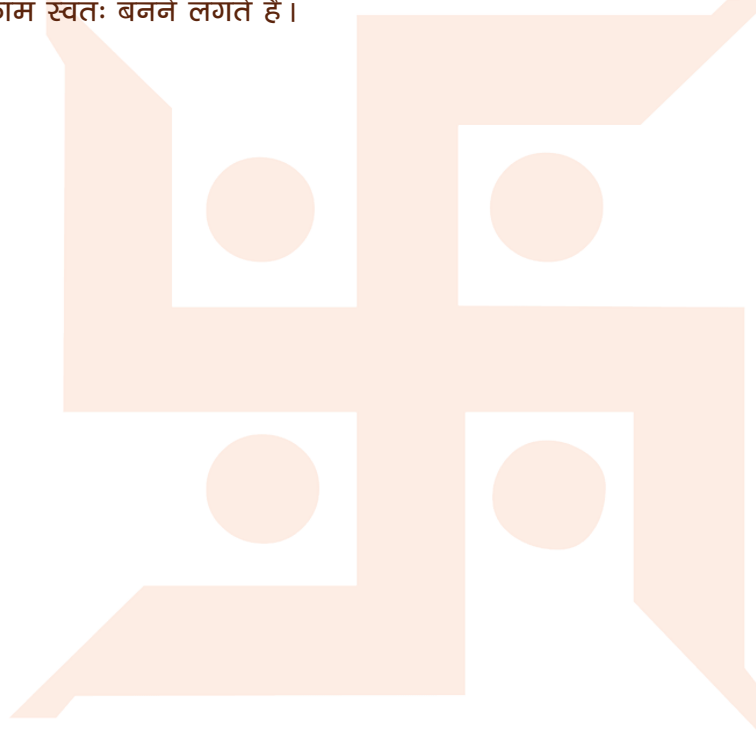
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को

प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी, आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान्, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रुचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रुचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश मंगल की राशि की प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपुरुषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरुष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रुचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरुष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्यकता प्राप्त होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीघ्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते हैं। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी वृहस्पति है। तथा चन्द्रमा भी लग्नेश होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके समस्त कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग बांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी होगी एवं कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र के प्रति आपकी रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। आपका आधुनिक विज्ञान, कविता साहित्य एवं संगीत के प्रति भी आकर्षण होगा तथा अवसरानुकूल इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इससे आपकी विद्वता तथा सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी। पंचमभाव में मन के कारक चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा इनसे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी साथ इस क्षेत्र में आप यदा-कदा भावुकता का भी परिचय देंगे। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं आर्दशवाद से युक्त होगा तथा इसकी परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

संतति भाव में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होंगी। आपकी संतति बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलताएं अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव होगा एवं सामान्यतया उनकी आज्ञापालन में तत्पर रहेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को माता-पिता के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष आत्मिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान वे माता के सहयोग से ही करना अधिक सुविधा जनक समझेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपकी तन-मन-धन से सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप एक भाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति योग्य एवं प्रतिभाशाली सिद्ध होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में संतोष जनक प्रदर्शन करेगी। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा दिलाएंगे। इसके साथ ही आपकी संतति चतुर व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य कलापों को सम्पन्न करने वाली होगी जिससे अन्य सामाजिक लोग भी उनसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे तथा उन्हें वांछित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रुचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रुचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही शनि भी दशम भाव में ही स्थित है। सिंह राशि अग्नि तत्व एवं शनि वायुतत्व प्रधान है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा एवं श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय करने के भी इच्छुक होंगे तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सफलता अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

शनि की दशमभाव में सिंह राशि की स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका के क्षेत्र वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं पेट्रोलियम विभाग, सरकारी या अर्द्धसरकारी क्षेत्रों में कार्य, भारी उद्योग या फैक्ट्री कर्मचारी, संदेश वाहक, रासायनिक क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। साथ ही सिंह राशि के प्रभाव से राजनीति के क्षेत्र में भी आपको वांछित सफलता एवं उन्नति की प्राप्ति हो सकती है। अतः आपका यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए इससे आप प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य, प्रिंटिंग प्रेस, भारी उद्योग, फैक्ट्री, पेट्रोल पम्प, खेती बागवानी, शराब का व्यापार तथा मोटे धान्यों के क्रय विक्रय का कार्य शुभ एवं लाभदायक रहेगा। यदि आप व्यापार करने के इच्छुक हैं तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापारिक कार्यों को प्रारंभ करें। इनसे आपको वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा अन्यत्र भी सन्तुष्टि बनी रहेगी।

दशम भाव में शनि के प्रभाव से जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही सामाजिक संस्थाओं यथा क्लब आदि में भी आप सम्मानित सदस्य हो सकते हैं। लेकिन सम्मान एवं यश की प्राप्ति में आपको किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रमपूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान एवं शिक्षित व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। साथ ही वे यदा कदा क्रोध के भाव का भी अनावश्यक प्रदर्शन कर सकते हैं। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं अपनत्व की भावना होगी तथा उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप भी अपने कार्य कलापों से पिता को सन्तुष्ट रखने के लिए यत्नशील होंगे। लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता की न्यूनता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेद भी बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः आपस में सामंजस्य का भाव बनाए रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नति भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जूनके बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों की उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारिरीक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्त के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकि शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु वे आपका कुछ नहीं कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत हैं। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छटे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएँगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि छे भव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं सप्तम भव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वितीय भव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वादश भव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। 17 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर व्यावसायिक जीवन के लिए अच्छा नहीं है। आपके संबंधों में खटास उत्पन्न हो सकती है। किसी भी नए रिश्ते की शुरुआत के लिए भी यह समय शुभ नहीं होगा। अतः इस समय के अंतराल में आपको कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

23 सितंबर के बाद आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी ले कर आ रहा है। साल की शुरुआत में निवेश करना सही नहीं होगा क्योंकि द्वितीय स्थान का राहु जल्दबाजी में गलत फैसला करा सकता है। राहु के गोचर के बाद शारीरिक बीमारी दूर करने में आपका व्यय होगा।

इस समय आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि आने वाले समय में आर्थिक उन्नति किस प्रकार की जाए। क्योंकि 1 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से आय के मार्ग प्रभावित होंगे जिससे आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आपको आर्थिक मामलों में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश नहीं करना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में द्वितीय राहु के प्रभाव से परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद-विवाद सामने आ सकते हैं। संयुक्त परिवार एकल परिवार में बंट सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान व प्रेम प्रणय के लिए अच्छा रहेगा। 04 फरवरी के बाद वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा।

मामा एवं अन्य संबंधियों को अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह समय बढ़िया रहेगा।

मई के बाद अपने जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। सितम्बर के बाद समय बहुत बढ़िया रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा। पंचम भाव पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति के अच्छे योग बन रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

राहु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। मई से अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा। गलत संगत उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

स्वास्थ्य

इस साल आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि आप अपने जीवन का भरपूर लाभ उठा सकें फिर चाहे व्यावसायिक जीवन हो या व्यक्तिगत जीवन यदि आप स्वस्थ नहीं होंगे तो इसका असर आपके जीवन पर पड़ेगा। इसलिए आपके लिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप साल की शुरुआत से ही इस ओर ध्यान देना शुरू कर दें। छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी, या सर्दी-जुखाम से आपको परेशानी हो सकती है।

01 मई के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिससे आप तनाव से भी ग्रसित हो सकते हैं। स्वास्थ्य जीवन के लिए आप योग, ध्यान या सुबह-सुबह व्यायाम नियमित रूप से करें। खान-पान का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठ है। छठे स्थान का शनि इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करा सकता है।

मई के बाद आप किसी विवाद अथवा कलह में न पड़ें और ध्यान अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें, क्योंकि सारे मुख्य ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। जिस व्यक्ति को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय आपकी यात्राएं अधिक सुखद व मनोरंजन से परिपूर्ण रहेंगी। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

1 मई के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। विदेशी संपर्कों से आपको लाभ प्राप्त होगा। वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर आपके लिए अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, दान पुण्य, पूजा-पाठ, मंत्र जाप, यज्ञ, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(18/08/2019 - 18/08/2039)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 18/08/2019 को आरम्भ और 18/08/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र सामान्य रूप से एक शुभ ग्रह कहा जाता है जो संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का होता है। आपकी कुण्डली में यह एकादश भाव में स्थित है। यह आपकी जन्म कुण्डली के पंचम भाव को देख रहा है तथा उस पर भाव के कारकत्व का प्रभाव पड़ रहा है। यह विवाह का कारक भी है। भाव जिसमें यह स्थित है मित्र, समुदाय, लक्ष्य, इच्छा और उसकी पूर्ति, धन की प्राप्ति, समृद्धि, बड़े भाई, भाग्योदय तथा टखनों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र एकादश अर्थात् आय भाव में स्थित है जहाँ से यह पंचम भाव को देख रहा है। इसके फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा तथा इस दशा काल में आपको कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र एकादश भाव अर्थात् आय भाव के अतिरिक्त चतुर्थ अर्थात् अपने ही भाव में स्थित होकर भाव के कारकत्व को प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आपकी आय में वृद्धि होगी। आप वाहन खरीद सकते हैं और चल-अचल संपत्ति अर्जित करेंगे।

व्यवसाय :

आप अपना व्यवसाय स्वयं आरंभ करेंगे। आप मवेशियों की खरीद-विक्री और जमीन-जायदाद का कारोबार करेंगे जो आपके लिए लाभदायक होगा। आपके मित्रों के अतिरिक्त आपके बड़े भाई सहयोगी स्वभाव के होंगे जो आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आप स्त्रियों के प्रति आकर्षित होंगे। आप पुरुषों से अधिक स्त्रियों से मित्रता करेंगे और स्त्रियों का साथ पाने को उत्सुक रहेंगे। आपके बच्चे आपके सहयोगी होंगे जो अपनी मेहनत के बल पर समाज में आपका नाम रौशन करेंगे। यह दशा अति आनन्ददायक होगी।

**अंतर्दशा :- शुक्र - मंगल
(18/08/2025 - 18/10/2026)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/08/2019 को प्रारंभ होकर 18/08/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 18/08/2025 को प्रारंभ होकर 18/10/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। मंगल ऊर्जा का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 12, 3, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अवधि आपके और आपके पिता के लिए अशुभ हो सकती है। प्रसिद्धि मिलने के बावजूद आप आज़ाकारी नहीं रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर में जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(18/10/2026 - 17/10/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 18/08/2019 को प्रारंभ होकर 18/08/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 18/10/2026 को प्रारंभ होकर 17/10/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

विदेश से उत्तम धनार्जन हो सकता है। आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रसिद्ध होंगे और लोकप्रियता प्राप्त करेंगे। कान की व्याधि से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु
(17/10/2029 - 17/06/2032)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/08/2019 को आरंभ हुई थी और 18/08/2039 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 17/10/2029 को प्रारंभ होकर 17/06/2032 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 12, 2, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पापकर्म में प्रवृत्त हो सकते हैं मगर दिखावा ऐसा करेंगे कि बहुत धार्मिक स्वभाव के हैं। विधवा स्त्रियों से संपर्क हो सकता है जिससे साख की क्षति होगी। दयालु होंगे मगर अप्रसन्न रहेंगे। प्रत्येक कदम उठाने से पूर्व गंभीर विचार आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।